

News Paper articles

Article of Dainik Bhaskar

bhaskar.com

दैनिक भास्कर, दिल्ली, 12 फरवरी, 2017

15

रिसर्व | सीयू के बाँटनी विभाग के छात्रों ने की खोज, मशरूम के फंगस से सीयू पाउडर तैयार कर लाएगी मार्केट में, इसका नाम कोरोलोपिसस है

मशरूम की एक ऐसी प्रजाति जो प्रदूषण पर करती है कंट्रोल

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

सेंट्रल यूनिवर्सिटी के वनस्पति विभाग के छात्रों ने मशरूम की ऐसे प्रजाति की खोज की है, जो वातावरण को प्रदूषण से मुक्ति दिला रही है। इस मशरूम का नाम कोरोलोपिसस है। कोरोलोपिसस मशरूम से तैयार होने वाला फंगस जिस स्थान पर रहता है, वहाँ वातावरण को प्रदूषित करने वाले तथा आस-पास पैदा होने वाले ह्राइड्रो कार्बन को समाप्त कर देता है। ह्राइड्रो कार्बन कोरोलोपिसस मशरूम से तैयार होने वाले फंगस का खाना है। यह फंगस ह्राइड्रो कार्बन को खत्म करने के साथ ही फैलता है। सेंट्रल यूनिवर्सिटी इस मशरूम का उत्पादन करेगी और इसके फंगस का पाउडर तैयार कर मार्केट में लाएगी। इससे लोग इसका जहाँ छिड़काव करेंगे, वहाँ के वातावरण में प्रदूषण से मुक्ति मिलेगी।



पेड़ में लगी कोरोलोपिसस मशरूम।

इसका उपयोग फूड इंडस्ट्री, टेक्सटाइल इंडस्ट्री, कागज उद्योग में कर सकते हैं

फसल व पौधे के लिए भी उपयोगी

सीयू के अतिस्टूडेंट प्रोफेसर डॉ. शाही ने बताया कि शोध में पता चला है कि ये कवक न केवल कार्बनिक पदार्थों को खत्म करता है, बल्कि पौधों जैसे घना, मृग की चूड़ि वर के लिए फायदेमंद है। कोरोलोपिसस मशरूम एक प्रकार का वाईट रॉट फंजाई है, जो कवक के बेसीडियोमयसीटीस का तन्त्र्य है। यह विशेष प्रकार का रिजोवोल्व्यूटिक नामक एक उर्वरक का उत्पादन करता है, इसके प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों फूड इंडस्ट्री, टेक्सटाइल इंडस्ट्री, कागज उद्योग, प्रदूषित जल के निस्तरण, क्लेन्टेक्नोलॉजी में किया जा सकता है। इससे कई प्रकार के स्वरेजगार की भी संभावनाएँ हैं। इस खोज को इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ बायोलॉजीकल एंड बायोटैक्नोलॉजी नामक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में प्रकाशित किया गया है।

डॉ. शाही ने बताया कि इसका पाउडर तैयार करने में बहुत ही कम खर्च आएगा। यह 20 रुपये में एक किलो मिल जाएगा। एक किलो पाउडर से एक हेक्टेयर में छिड़काव किया जा सकता है। यह खास होने वाली प्रजाति नहीं है। जहाँ पर एक बार छिड़काव हो जाता है वहाँ यह फैलती रहती है।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी के बाँटनी विभाग के अतिस्टूडेंट प्रोफेसर डॉ. एसके शाही के बच्चे रिजोवोल्व्यूटिक नामक एक उत्पाद इजाजत किया है। इससे द्वारा कवक को कम किया जा सकता है। इस लेब में एक विशेष प्रकार के कवक की खोज की गई है, जो कई प्रकार के प्रदूषण को दूर करने के लिए काम करता है। डॉ. शाही के निदेशन में शोध छात्र निम्नी अखिल ने पेड़ की छाल में पाए जाने वाले ऐसे ही मशरूम की खोज की है। इसे वाईट रॉट फंजाई भी कहा जाता है, जो मृदा में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्बनिक अवशेष पदार्थों को समाप्त करने को क्षमता रखता है।

गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी के वनस्पति विभाग ने नए प्रजाति के कवक की खोज की है। जो प्रदूषण से वातावरण को मुक्ति दिलाएगा। वर्तमान में प्रदूषण एक बड़ी समस्या बन गई है। इसके लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन इसका समाधान नहीं किया जा सका है। आधुनिक जीवन में कई तरह से हम इससे प्रभावित हो रहे हैं। इसमें मृदा प्रदूषण प्रमुख है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के रासायनिक कीटनाशक और अनेक फंगीसाइट के प्रयोग से मृदा का प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इससे लोगों की सेहत पर भी काफी गहरा प्रभाव हो रहा है। इस मृदा में विभिन्न प्रकार के हानिकारक कार्बनिक पदार्थ होते हैं, जो कई बीमारियों जैसे कैंसर, डायरिया, तनाव आदि का कारण बनते हैं। इस

Article of Dainik Bhaskar

रिसर्व

यूनिवर्सिटी को विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली से मिली है मंजूरी, बाँटनी विभाग में होंगे छत्तीसगढ़ की वनस्पतियों पर शोध

सीयू में दुर्लभ वनस्पति पर खोज, दवा में आएंगी काम

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

सेंट्रल यूनिवर्सिटी अब वनस्पतिक प्रजाति के लाईकेंस की खोज छत्तीसगढ़ में करेगी। इसके लिए यूनिवर्सिटी के बाँटनी विभाग के डॉ. एसके शाही की परियोजना को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली से मंजूरी मिली है।

गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी ने इस परियोजना के द्वारा छत्तीसगढ़ में पाए जाने वाले दुर्लभ वनस्पतिक तत्वों पर शोध कार्य शुरू कर दिया है। यूनिवर्सिटी के डॉ. शाही ने बताया कि ये दुर्लभ तत्व लाईकेंस नामक वनस्पतिक प्रजाति में पाए जाते हैं, जो विभिन्न पेड़ों की छाल पर उगते हैं। इसमें कई ऐसे तत्व हैं, जिनके द्वारा कई प्रकार के रोगों जैसे कैंसर, डायरिया, मधुमेह, टीबी आदि का इलाज संभव किया सकता है। ये दुर्लभ वनस्पति लाईकेंस ज्यादातर उत्तर भारत के उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश के साथ पूर्वी भारत के कई क्षेत्रों में पाए जाते हैं। वनस्पति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके शाही ने बताया कि अभी तक यहाँ इसकी कई नई प्रजातियों का पता चला है। यूनिवर्सिटी में इस तरह की यह पहली परियोजना होगी, क्योंकि अभी तक इस क्षेत्र में छत्तीसगढ़ में कार्य नहीं हुए हैं। इस परियोजना के साथ ही सीयू के वनस्पति विभाग भारत के उन संस्थाओं में एक होगा जहाँ लाईकेंस पर कार्य हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि अचानकमार टाइगर रिजर्व में लाईकेंस की 100 से अधिक प्रजातियाँ पाई गई हैं।



पेड़ों में इस प्रकार पाए जाते हैं लाईकेंस।

लाईकेंस में 650 से अधिक तत्व पाए जाते हैं

डॉ. शाही ने बताया कि लाईकेंस का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में कई रूपों में किया जाता है। कई क्षेत्रों में इसका प्रयोग पारंपरिक और लोक औषधि में किया जाता है। लाईकेंस में पाए जाने वाले दुर्लभ तत्वों के गुणों का विश्लेषण, इसमें उपस्थित 700 से अधिक तत्वों द्वारा किया जा सकता है। इसमें से करीब 650 से अधिक तत्व सिर्फ लाईकेंस में पाए जाते हैं। इन दुर्लभ तत्वों के द्वारा कई प्रकार के व्यवसायिक क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएँ भी हैं। क्योंकि इनसे कई प्रकार के रंग और डाई का निर्माण किया जा सकता है।

ये हैं लाईकेंस : लाईकेंस एक कवक और कैवाल का संगठित रूप है। लाईकेंस एक प्रकार के प्रदूषण सूचक होते हैं, जो किसी स्थान विशेष में वहाँ के वातावरण में प्रदूषण की स्थिति की जानकारी प्रदान करते हैं।

Article of Hari Bhoomi

वातावरण को प्रदूषण मुक्त करने होगा सहायक, बाँटनी डिपार्टमेंट पेटेंट कराने कर रहा विचार

सीयू में नए प्रजाति के कवक की खोज, पेटेंट कराने की तैयारी

हरिभूमि न्यूज़ | **बिलासपुर**

गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी के बाँटनी डिपार्टमेंट ने नए प्रजाति के कवक की खोज की है। बताया जा रहा है कि यह नए प्रजाति का कवक प्रदूषण से वातावरण को मुक्ति दिलाएगा। वर्तमान में प्रदूषण एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है जिसके लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं, किन्तु इसका पूरी तरह से समाधान नहीं किया जा सका है।

आधुनिक जीवन में कई तरह से हम प्रदूषण से प्रभावित होते रहते हैं। इसमें मृदा प्रदूषण प्रमुख है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के रासायनिक कीटनाशक तथा अनेक फंगीसाइट के प्रयोग से मृदा का प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे लोगों की सेहत पर भी काफी गहरा प्रभाव हो रहा है। इस

मृदा में विभिन्न प्रकार के हानिकारक कार्बनिक पदार्थ होते हैं जो कई सारे भयावह बीमारियों जैसे कैंसर, डायरिया तथा आदि का कारण बनते हैं तथा जिसके कारण हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होते जा रही है तथा शरीर अनेक प्रकार की बीमारियों में लड़ने में असक्षम होता जा रहा है। इसी समस्या को देखते हुए सेंट्रल यूनिवर्सिटी के बाँटनी विभाग के सह-आचार्य डॉ. एस. के. शाही के बायोरिसेस टैक लैब ने इसका एक उपाय ईजाद किया है, जिसके द्वारा काफी हद तक इस प्रकार के कार्बनिक प्रदूषण को कम किया जा सकता है। इस लैब में एक विशेष प्रकार के कवक की खोज हुई है जो अनेक प्रकार के प्रदूषण को दूर करने के लिए कारगर है। बाँटनी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शाही के सानिध्य में शोध छात्रा निक्की अग्रवाल



सीयू में खोज गया कवक।



कवक की तस्वीर।

ने पेड़ की छाल में पाए जाने वाले ऐसे कवक की खोज की है, जिन्हें वाइट रॉट फंजाई कहा जाता है, जो मृदा में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्बनिक अवशिष्ट पदार्थों को समाप्त करने की क्षमता रखता है। ये कार्बनिक पदार्थ वातावरण को न केवल प्रदूषित करते हैं, बल्कि कैंसर जैसी अनेक जानलेवा रोगों को भी पैदा करते हैं। कोरोलोपिस नामक कवक की नई प्रजाति को पहली बार छत्तीसगढ़ में खोजा गया है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहली बार पालीसायाकिलक एरोमेटिक हाइड्रोकार्बन को अपघटित करने के उपयोग में लाया गया है।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी में किए गए शोध से पता चला है कि ये कवक न केवल कार्बनिक पदार्थों को अपघटित करता है, बल्कि पौधों जैसे चना, मूंग की वृद्धि दर को भी बढ़ाता है। कोरोलोपिस एक प्रकार का वाइट रॉट फंजाई है, जो कवक के बेसीडियोमायसीटीस का सदस्य है। यह विशेष प्रकार का लिप्रिनोलायटिक नामक एक एंज़ाइम का उत्पादन करता है, जिसका प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों फूड इण्डस्ट्रीज, टेक्सटाइल इंडस्ट्री, कागज उद्योग, प्रदूषित जल के निस्कारण, नैनोटेक्नोलॉजी में किया जा सकता है तथा इनसे कई प्रकार के स्वरोजगार को भी संभावनाएँ हैं। इस खोज को इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी ऑफ बायोडिग्रेडेशन एंड बायोडिग्रेडेशन नामक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। इस खोज से हाइड्रोकार्बन को अपघटित करने में कई प्रकार के उद्योगों को भी सहायता मिलेगी।

इस कवक को प्रयोगशाला में संवर्धित कर इसका फार्मूलेशन तैयार किया गया है जिसका उपयोग प्रदूषण वाली स्थानों पर इसका छिड़काव करके किया जाता है, जिससे एक माह में विभिन्न हाइड्रोकार्बन जैसी प्रदूषण को अपघटित किया जा सकता है। बाँटनी विभाग इसका फार्मूलेशन तैयार करके उसका पेटेंट कराने तथा उसका उत्पादन यूनिवर्सिटी स्तर पर करने पर विचार कर रहा है, जिससे छात्रों के लिए स्वरोजगार तथा युनिवर्सिटी स्तर पर राजस्व प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

Article of Nav Bharat

‘कवक’ दिलाएगा प्रदूषण से मुक्ति

■ नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर

गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग ने नए प्रजाति के कवक की खोज की है जो प्रदूषण से वातावरण को मुक्ति दिलाएगा। वर्तमान में प्रदूषण एक बहुत बड़ी भयावह समस्या बन चुकी है जिसके लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं किन्तु इसका पूरी तरह से समाधान नहीं किया जा सका है। आधुनिक जीवन में कई तरह से हम इससे प्रभावित होते रहते हैं। इसमें मृदा प्रदूषण प्रमुख है क्योंकि विभिन्न प्रकार के रासायनिक कीटनाशक तथा अनेक फंगीसाइट के प्रयोग से मृदा का प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिससे लोगों की सेहत पर भी काफी गहरा प्रभाव हो रहा है। इस मृदा में विभिन्न प्रकार के हानिकारक कार्बनिक पदार्थ होते हैं जो कई सारे भयावह बीमारियों जैसे कैंसर, डायरिया, तनाव आदि का कारण बनते हैं तथा जिसके कारण हमारी रोगप्रतिरोधक क्षमता कम होते जा रही है तथा शरीर अनेक प्रकार की बीमारियों में लड़ने में असक्षम होता जा रहा है।

इसी समस्या को देखते हुए सेंट्रल यूनिवर्सिटी के बाँटनी विभाग के सह-आचार्य डॉ. एस. के. शाही के बायोरिसेस टैक लैब ने इसका एक उपाय ईजाद किया है जिसके द्वारा काफी हद तक इस प्रकार के कार्बनिक प्रदूषण को कम किया जा सकता है। इस लैब में एक विशेष प्रकार के कवक की खोज हुई है जो अनेक प्रकार के



अनुसंधान

- सीयू के वनस्पति विभाग ने खोजा नया कवक
- कार्बनिक पदार्थ के कारण रोगप्रतिरोधक क्षमता कम हो रही

प्रदूषण को दूर करने हेतु कारगर है। बाँटनी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस. के. शाही के सानिध्य में शोध छात्रा निक्की अग्रवाल ने पेड़ की छाल में पाए जाने वाले ऐसे कवक की खोज की है जिन्हें वाइट रॉट फंजाई कहा जाता है, जो मृदा में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्बनिक अवशिष्ट पदार्थों को समाप्त करने की क्षमता रखता है। ये कार्बनिक पदार्थ वातावरण को न केवल प्रदूषित करते हैं बल्कि कैंसर जैसी अनेक जानलेवा रोगों को भी पैदा करते हैं। कोरोलोपिस नामक कवक की नई प्रजाति को पहली बार छत्तीसगढ़ में खोजा गया है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहली बार पालीसायाकिलक एरोमेटिक

हाइड्रोकार्बन को अपघटित करने हेतु उपयोग में लाया गया है।

सीयू में किये गए शोध से पता चला है कि ये कवक न केवल कार्बनिक पदार्थों को अपघटित करता है बल्कि पौधों जैसे चना, मूंग की वृद्धि दर को भी बढ़ाता है। कोरोलोपिस एक प्रकार का वाइट रॉट फंजाई है जो कवक के बेसीडियोमायसीटीस का सदस्य है। इस खोज को इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी ऑफ बायोडिग्रेडेशन एंड बायोडिग्रेडेशन नामक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। इस खोज से हाइड्रोकार्बन को अपघटित करने में कई प्रकार के उद्योगों को भी सहायता मिलेगी।

प्रदूषण को अपघटित करता है

इस कवक को प्रयोगशाला में संवर्धित कर इसका फार्मूलेशन तैयार किया गया है जिसका उपयोग प्रदूषण वाली स्थानों पर इसका छिड़काव करके किया जाता है जिससे 1 माह में विभिन्न हाइड्रोकार्बन जैसी प्रदूषण को अपघटित किया जा सकता है।

फार्मूले का सीयू कराएगा पेटेंट

बाँटनी विभाग इसका फार्मूलेशन तैयार करके उसका पेटेंट कराने तथा उसका उत्पादन विश्वविद्यालय स्तर पर करने पर विचार कर रहा है, जिससे छात्रों के लिए स्वरोजगार तथा विश्वविद्यालय स्तर पर राजस्व करने में मदद मिलेगी।